पेद्रो और पादरी

मेक्सिको की लोककथा

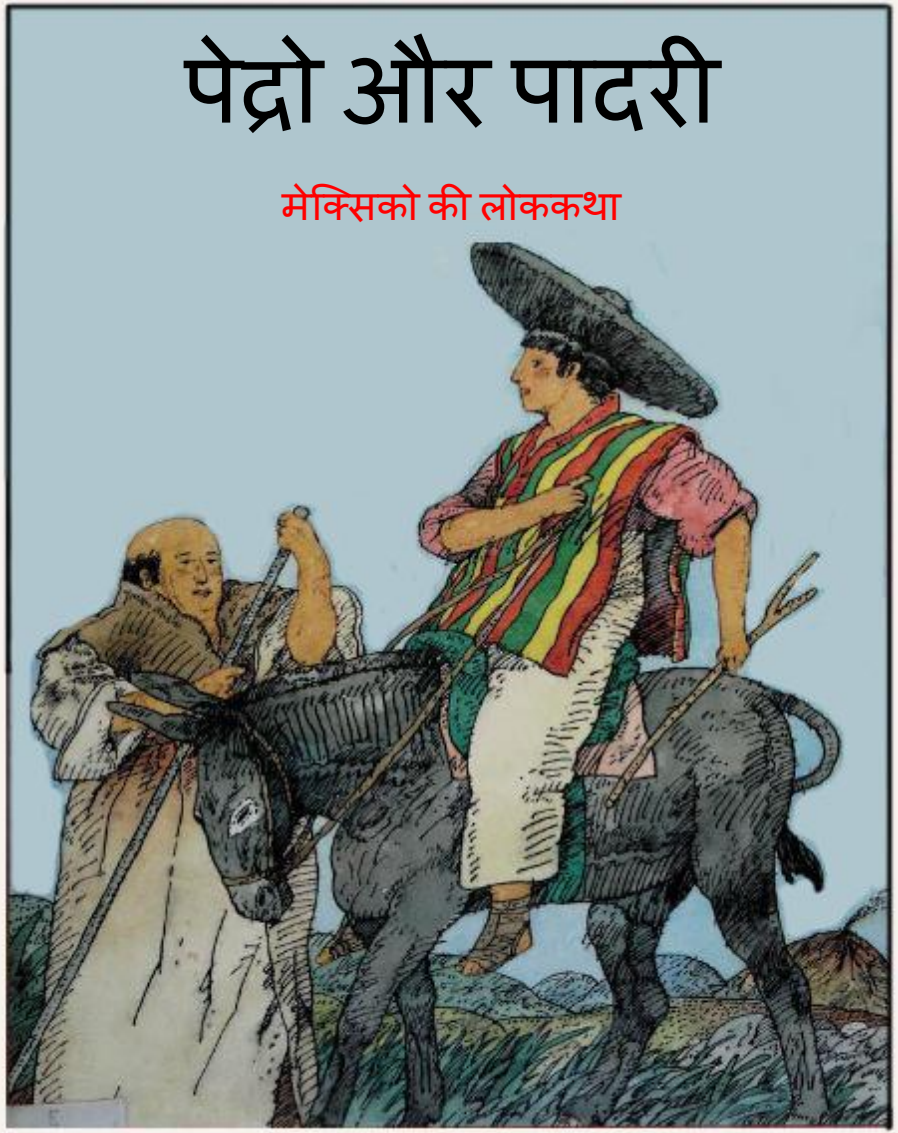

पेद्रो और पादरी

मेक्सिको की लोककथा

"पेद्रो, तुम बिलकुल काम नहीं करते हो!" उसके पिता ने उसे डांटा. "जब भी मैं तुम्हें देखता हूँ, तुम्हें कुदाल पर झुका हुआ पाता हूँ!" दोनों उस जगह गुड़ाई कर रहे थे जहाँ लोबिया लगे थे. और सदा की भाँति पेद्रो उतना भी काम नहीं कर रहा था जितना एक लड़के को करना चाहिए.

पेद्रो के पिता ने कहा, "मैं तुम से पूरी तरह निराश हो गया हूँ, पेद्रो. अब तुम्हें किसी और के लिए काम करना होगा. शायद किसी अजनबी के लिए काम करना तुम सीख जाओ."

और इस आशा से कि वह कहीं न कहीं काम ढूँढ़ लेगा, अगली सुबह पेद्रो को घर से भेज दिया गया. सारा दिन वह धूल भरे रास्ते पर चलता रहा. संध्या के समय वह एक गाँव में पहुँचा. उसी समय एक पादरी छोटी-सी चर्च से बाहर आ रहे थे. पेद्रो उनके पास गया और बोला, “पादरी जी, क्या आप बता सकते हैं कि रहने के लिए मुझे जगह कहाँ मिल सकती है?”

पादरी ने पेद्रो को ध्यान से देखा. उन्होंने देखा कि वह एक मज़बूत कद-काठी वाला युवक था, उसका चेहरा नटखट और आँखें काली थीं. उन्होंने कहा, “लड़के, क्या तुम घर से भाग कर आए हो?”

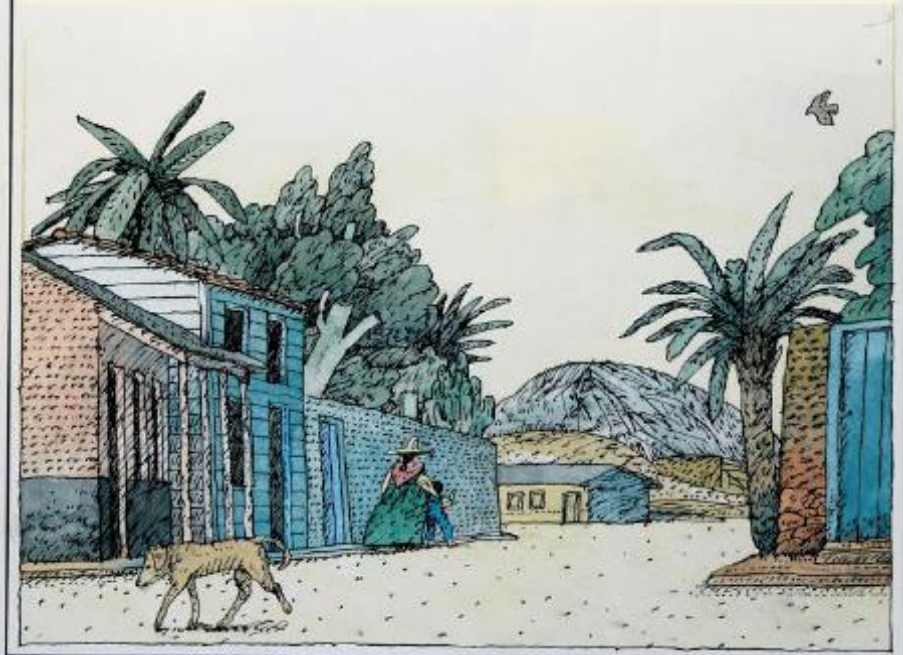

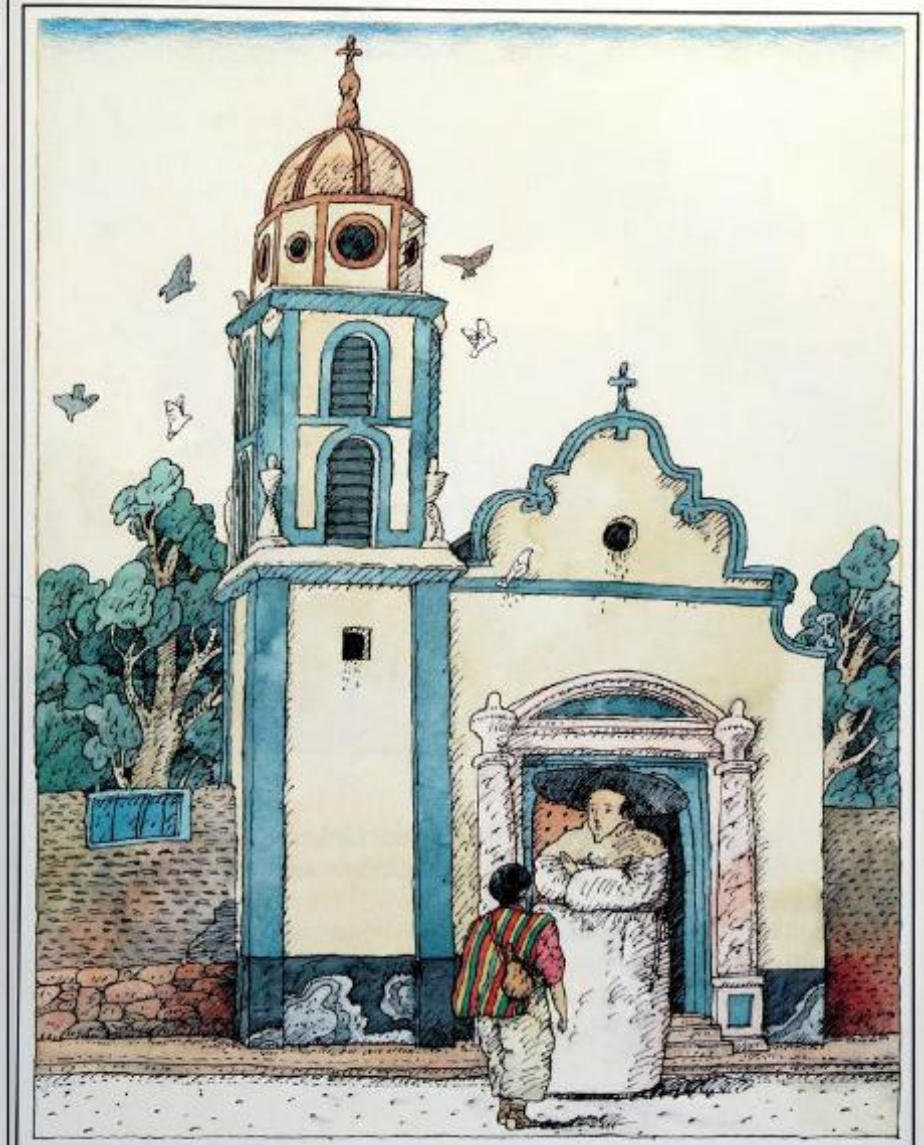

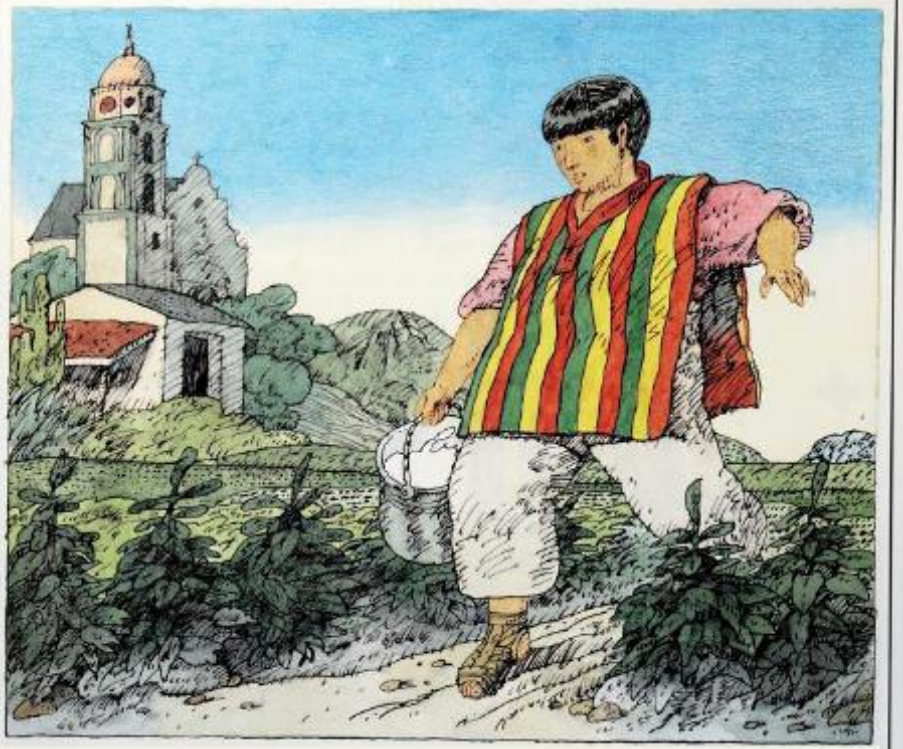

“नहीं, पादरी जी,” पेद्रो ने कहा. “मैं पेद्रो दे उड़देमालिस हूँ. मैं एक किसान का बेटा हूँ. लेकिन मैं उस भेड़िये के बच्चे जैसा हूँ जिसे माँद से निकाल दिया गया हो. मेरे पिता ने मुझ से कहा कि मुझे कहीं ओर काम ढूँढ़ना होगा.”

“यहाँ बहुत सारे काम हैं जो तुम कर सकते हो,” पादरी ने कहा. “मैं तुम्हें कोई पैसे नहीं दे सकता, लेकिन तुम मेरे घर में रह सकते हो और मेरे साथ खाना खा सकते हो.”

“धन्यवाद, पादरी जी,” पेद्रो ने कहा, “आप जो भी कहेंगे मैं वही काम आपके लिए करूँगा.”

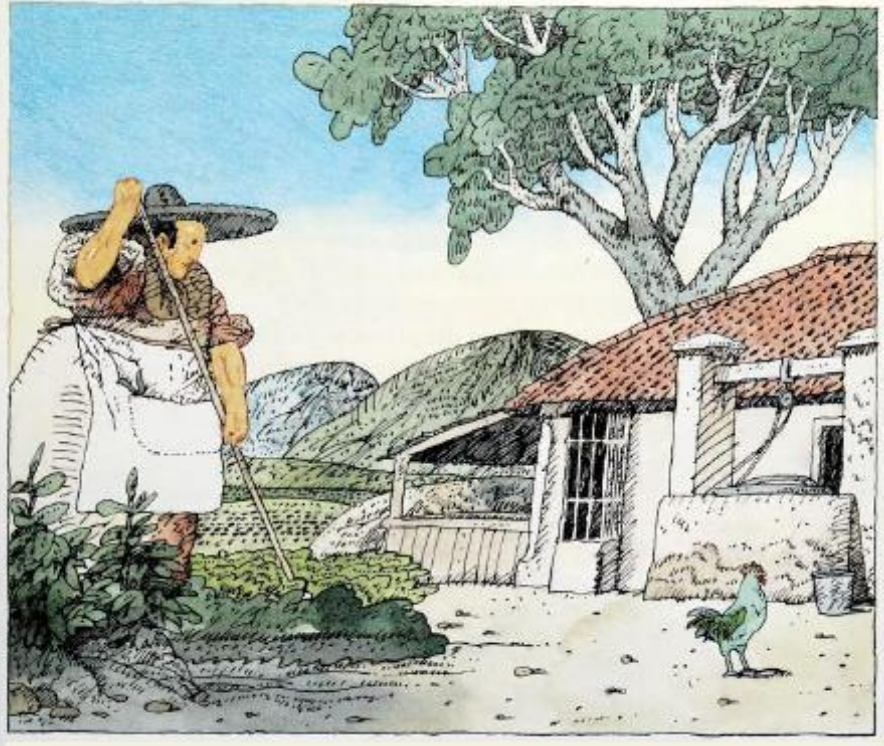

पादरी के पीछे-पीछे चलते वह चर्च के पास उनके घर आ गया. कोई काम पाकर वह सच में बहुत प्रसन्न था.

कई दिनों तक पेद्रो पादरी के घर में रहा और उनके बाग़ और चर्च में काम करता रहा. उसका मनपसंद काम था चर्च की घंटी बजाना. पहली घंटी वह सबको जागने के लिए बजाता था. फिर जब गाँव वालों को इतना समय मिल जाता था कि वह तैयार हो जायें, तो लोगों को चर्च में बुलाने के लिए दूसरी घंटी बजाता था.

पेद्रो को घंटी की रस्सी पकड़ कर आगे-पीछे घुमाना बहुत अच्छा लगता था: *टन-टन, टन-टन!* लेकिन अगर वह रस्सी को ज़ोर से खींचता था, तब घंटी *टन-टूँ* करती थी. तब वह समझ जाता कि घंटी अटक गई थी और सीढ़ी चढ़ कर उसे ऊपर घंटाघर जाना होगा और घंटी को सीधा करने होगा.

ऊपर घंटाघर में चमगादड़ थे. पेद्रो को उनसे डर लगता था. लेकिन जब वह घंटी को अटका कर बंद कर देता था तो गाँव-वाले उसका मज़ाक उड़ाते थे. वह जानते थे कि पादरी ने कभी भी ऐसा न किया था.

एक रविवार की सुबह जब पादरी ने दिन की पहली घंटी बजाने के लिए पेद्रो को उठाया तो उसने फिर से आँखें बंद करने की भूल कर दी. अगली बार जब उसकी नींद खुली तो पादरी उसे दूसरी घंटी बजाने के लिए कह रहे थे. पेद्रो ने घंटी बजाई.

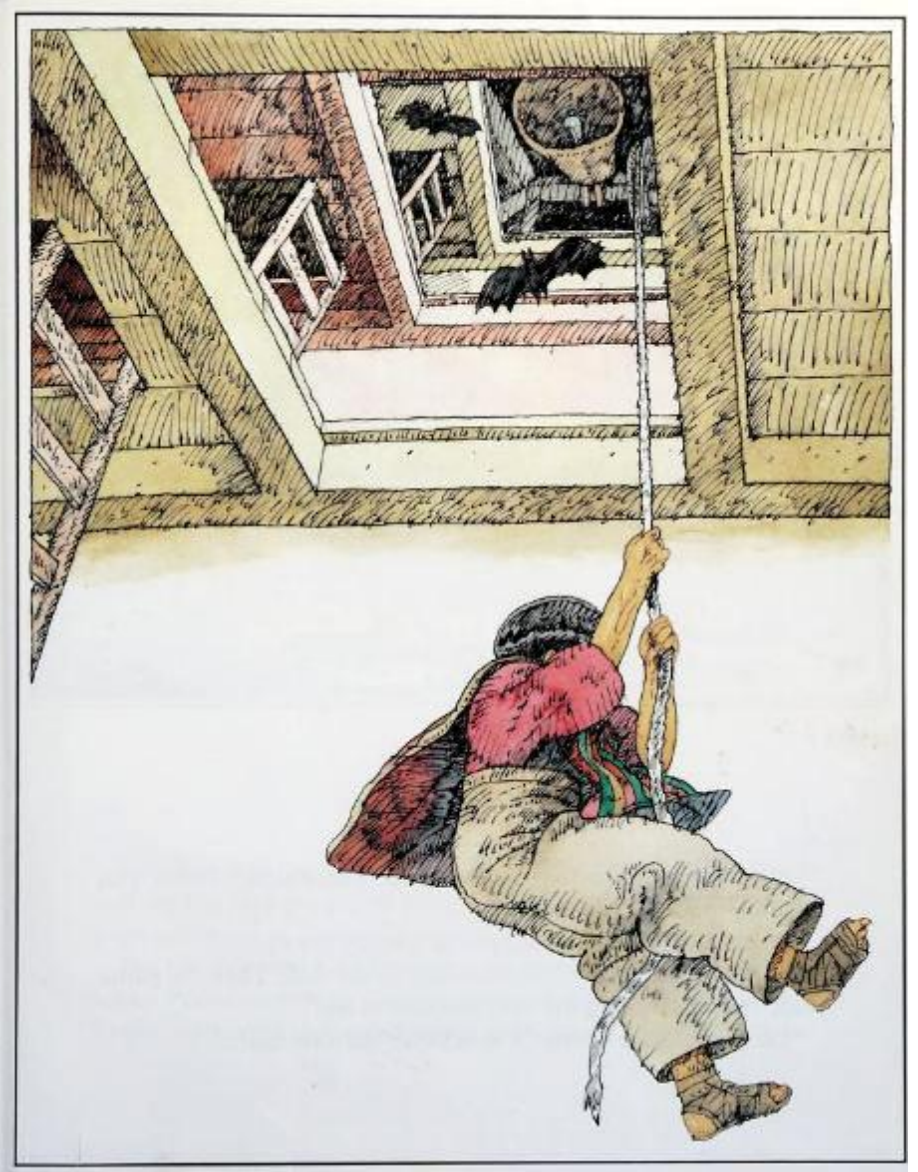

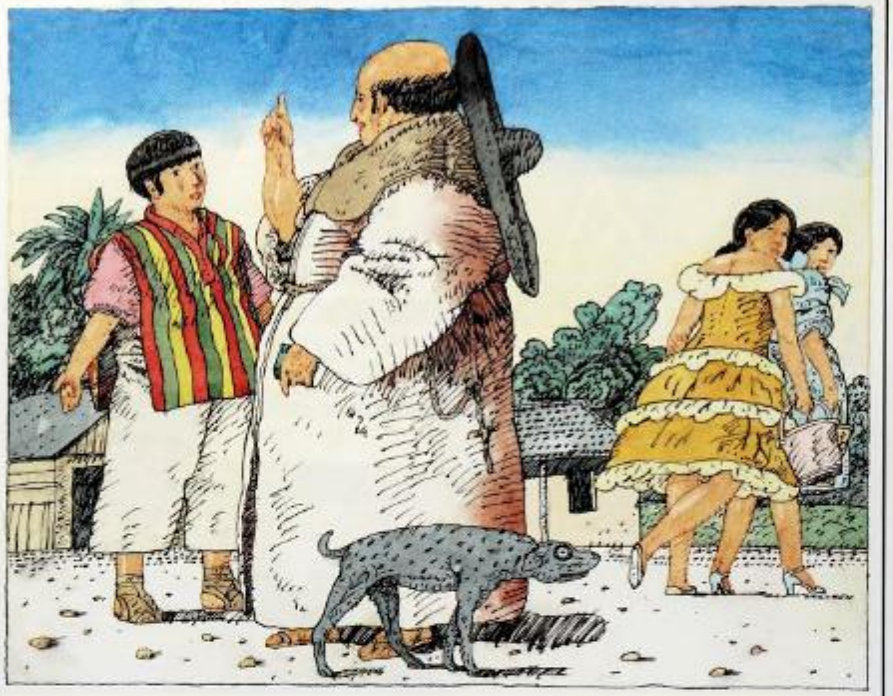

जब कोई भी चर्च न आया तो पादरी ने पूछा, “पेद्रो, क्या तुम ने पहली घंटी बजाई थी? क्यों बजाई थी न?”

“हाँ, हाँ!” पेद्रो ने कहा. “लेकिन मुझे लगता है कि कोई गाँव वाला उठा ही नहीं.”

दो औरतें जो कुएं की तरफ जा रही थीं, उधर से गुज़रीं. तब पादरी ने कहा, “तुम ने घंटी नहीं बजाई! तुम ने मुझ से झूठ बोला!”

“मुझे क्षमा करें,” पेद्रो बोला. “मैं अब कभी झूठ नहीं बोलूँगा.”

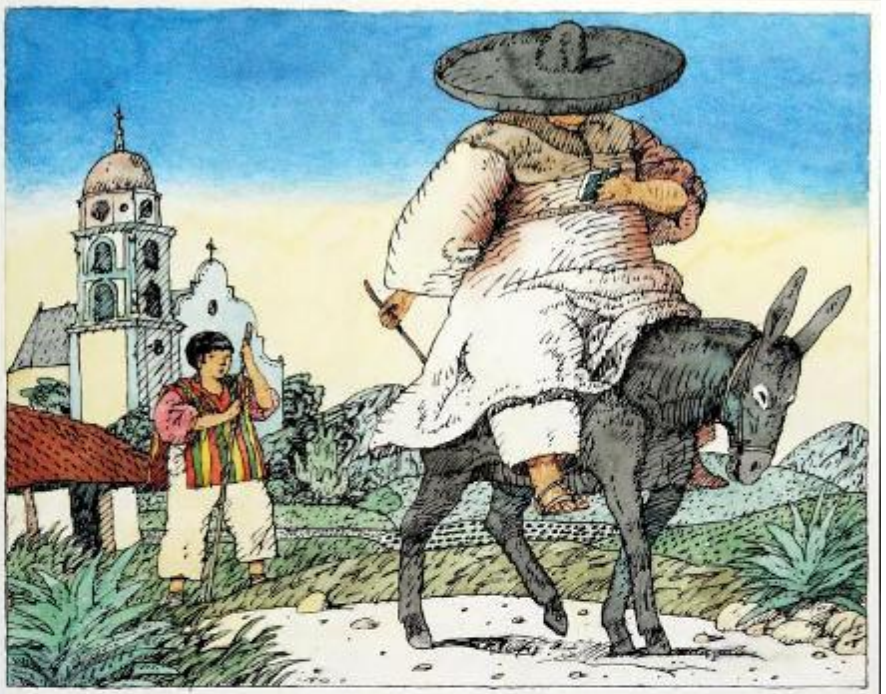

फिर एक दिन पादरी अपने गधे, पैन्चिटा, पर सवार होकर बस्ती के बीमार लोगों से मिलने गए. जाने से पहले उन्होंने पेद्रो को मकई के खेत में गुड़ाई करने और घासपात निकालने का काम सौंप दिया.

लेकिन धूप तेज़ थी. पादरी आँख से ओझल हुए ही थे कि पेद्रो गोदाम में जाकर लोबिया के एक बोरे पर लेट गया. यद्यपि यह दुपहर का आराम करने का समय न था, वह शीघ्र ही सो गया.

जब पादरी लौटे तो उन्होंने पेद्रो को सोते हुए पाया. उन्होंने उसे झकझोरा और कहा, “तुम ने ज़मीन में गुड़ाई क्यों नहीं की?”

“मैंने गुड़ाई की थी,” पेद्रो ने कहा. “घासपात दुबारा उग आए होंगे. गर्मियों के दिनों में वह बहुत तेज़ी से उगते हैं.”

“पेद्रो, पेद्रो!” पादरी चिल्लाये. “यह भयंकर झूठ है! तुम ने झूठ बोलना कहाँ सीखा?”

“एक पुस्तक से,” पेद्रो बोला.

“तुमने पुस्तक से झूठ बोलना सीखा?” पादरी ने चीखते हुए कहा.

“हाँ,” पेद्रो ने कहा. “उसके मुख्य पृष्ठ पर लिखा था, **झूठ कैसे बोलें**! अगर अपना गधा, पैन्चिटा, आप मुझे दे दें तो मैं वह पुस्तक आप के लिए ले आऊँगा,”

“मेरा गधा ले जाओ और वह पुस्तक लेकर आओ,” पादरी बोले.

पेद्रो गधे पर सवार हो गया. उसने लगाम कस कर पकड़ ली और चिल्लाया, “अर्र, अर्र!” लेकिन उसने लगाम इतनी कस कर पकड़ रखी थी कि गधा अपनी जगह से हिला भी नहीं.”

पेद्रो ने पादरी से कहा, “आपका गधा नहीं जायेगा. अगर आप अपनी हैट मुझे दे दें तो शायद यह समझेगा कि आप ही इस पर सवार हैं.”

पादरी ने अपनी चौड़ी हैट पेद्रो को दे दी. पेद्रो ने हैट पहन ली और गधे पर सवार हो गया और चल दिया.

कुछ दूर जाने के बाद पेद्रो ने गधे से कहा, “पैन्चिटा, क्या तुम विश्वास करोगे कि कोई ऐसी पुस्तक है जो झूठ बोलना सिखाती है?”

पैन्चिटा ने अपना एक कान आगे की ओर घूमा कर कहा, “*इइइ-अअअआ!*”

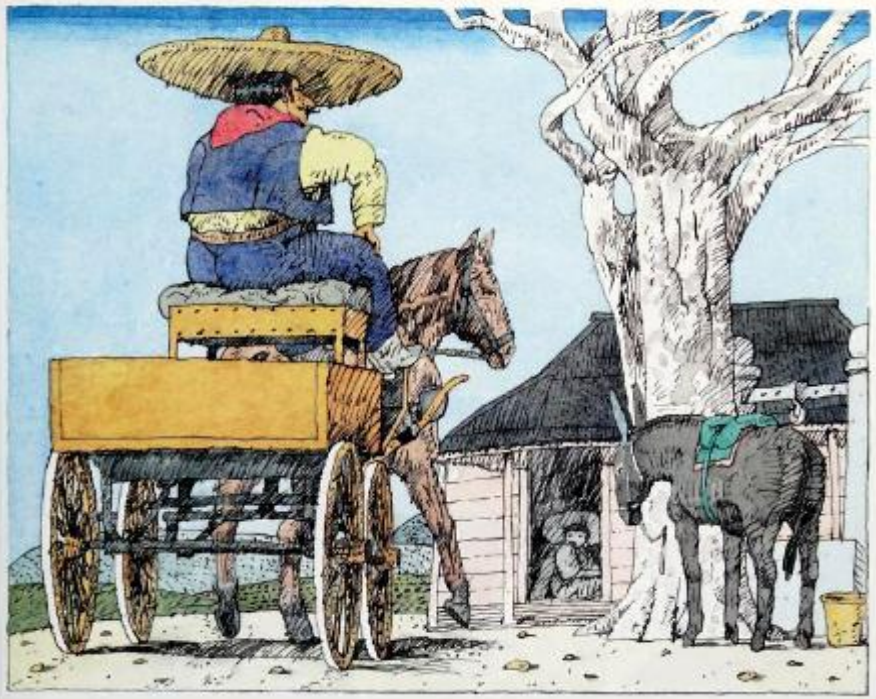

दुपहर के समय वह एक वीरान झोंपड़ी के पास पहुँच गया. झोंपड़ी के निकट बिना पत्तों का कांटेदार पेड़ था और पिछली तरफ एक पुराना कुआँ था. पेद्रो ने पैन्चिटा को पेड़ के साथ बाँध दिया. कुएं के पास रखी एक ज़ंग लगी बाल्टी में पानी निकाल कर उसने गधे को पीने के लिए दिया.

फिर पेद्रो झोंपड़ी की भीतर आ गया और सोने के लिए धूल भरे फर्श पर लेट गया. शीघ्र ही एक वैगन के पहियों की आवाज़ सुन कर उसकी नींद खुल गई. *गुनको, गुनको, गुनको.* फिर वैगन रुक गई!

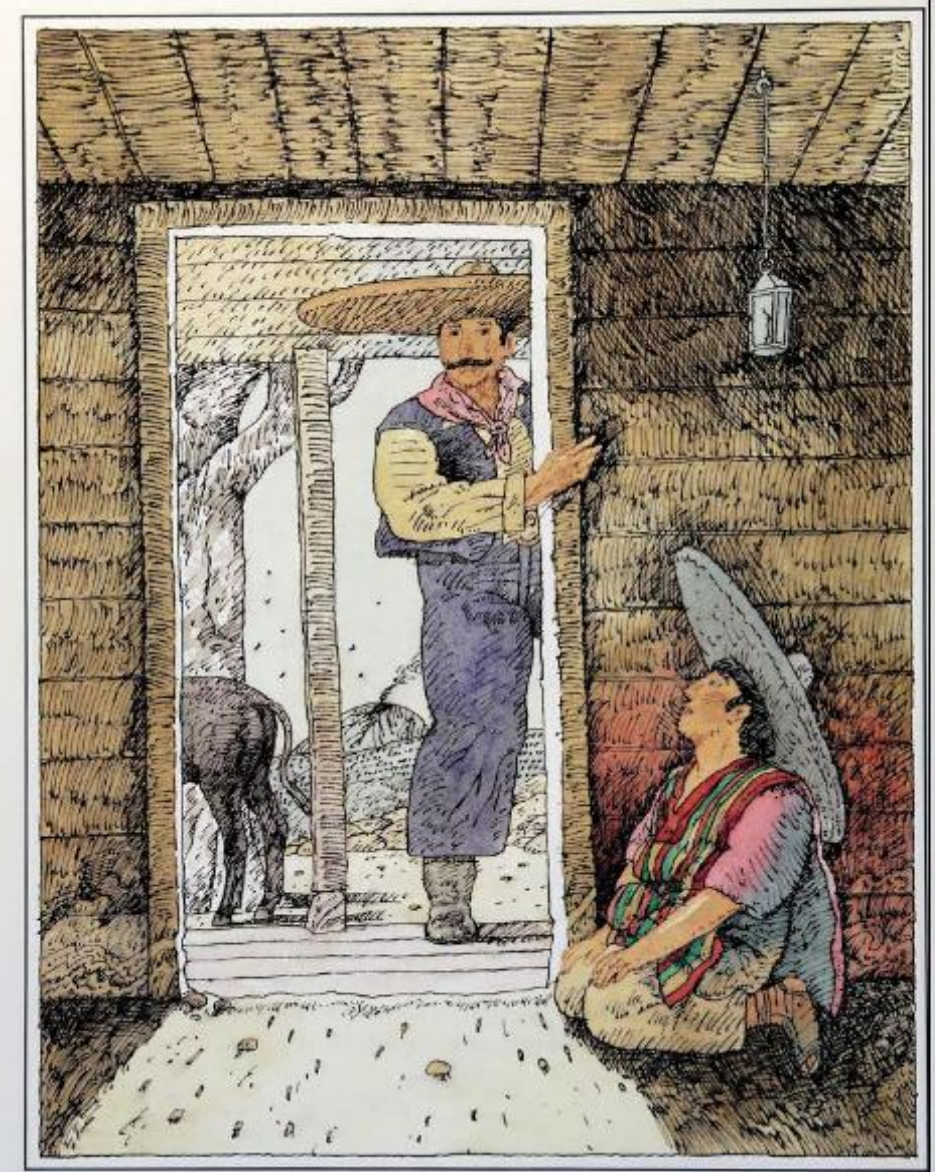

पेद्रो उठ कर बैठ गया. कोई आ रहा था! उसने रेत पर किसी के कदमों की आवाज़ सुनी, *गव्फ़, गव्फ़, गव्फ़.*

दरवाज़े पर एक आदमी दिखाई दिया. वह एक नाटा और गठीला आदमी था जिसने किसान की पुरानी पोशाक पहन रखी थी. पेद्रो तनाव-मुक्त हो गया. और उसे बेचने के लिए अपने आसपास कोई चीज़ झटपट ढूँढ़ने लगा.

जब उस आदमी ने पूछा, "क्या तुम इस झोंपड़ी में रहते हो?"

पेद्रो ने उत्तर दिया, "नहीं, पर यह मेरी है. अपने पैसों के पेड़ को पानी देने के लिए मैं अभी-अभी यहाँ आया हूँ."

"पैसों का पेड़!" वह आदमी ऊँची आवाज़ में बोला. "क्या पैसों का पेड़ भी होता है?"

"मेरा गधा उसके साथ बँधा है," पेद्रो ने कहा. फिर वह बाहर आया, उसने बाल्टी भरी और पेड़ को पानी देने लगा.

आदमी संदेह से उसको देखता रहा. "इस पेड़ पर काँटों के सिवाय कुछ और मुझे दिखाई नहीं देता," उसने कहा.

"काँटे!" पेद्रो चिल्लाया. "ध्यान से देखो! सच में वह पैसों की कलियाँ हैं. मैं बहुत धनी बन जाऊँगा."

उस आदमी ने बड़े ध्यान से पेड़ को देखा. "क्या यह पेड़ तुम बेचोगे?" उसने पूछा. "अपनी वैगन में मैं इसे घर ले जाऊँगा."

"अब सच तो यह है कि मुझे अभी पैसे चाहिए," पेद्रो ने कहा. "मुझे एक सौ पिसौ दे दो और यह पेड़ तुम्हारा हो गया."

उस आदमी ने पेद्रो को पैसे दे दिए और फिर पेड़ को निकालने के लिए ज़मीन खोदने लगा.

जितनी तेज़ पैन्चिटा चल सकता था उतनी तेज़ पेद्रो वहाँ से चल दिया. उसने कहा, "पैन्चिटा, क्या तुम विश्वास करोगे कि पैसे पेड़ों पर उगते हैं?"

पैन्चिटा ने अपना एक कान आगे की ओर घुमाया. उसने कहा, "*इइइ-अअअआ!*"

पेद्रो यहाँ-वहाँ घूमता रहा और उन पैसों से अपना खर्च चलाता रहा. लेकिन एक दिन जब उसके पैसे समाप्त हो गए तो उसने गधों के एक छोटे से कारवाँ को उस रास्ते पर आते देखा. उन व्यापारियों को बेचने के लिए वह अपने आसपास कोई चीज़ झटपट ढूँढ़ने लगा.

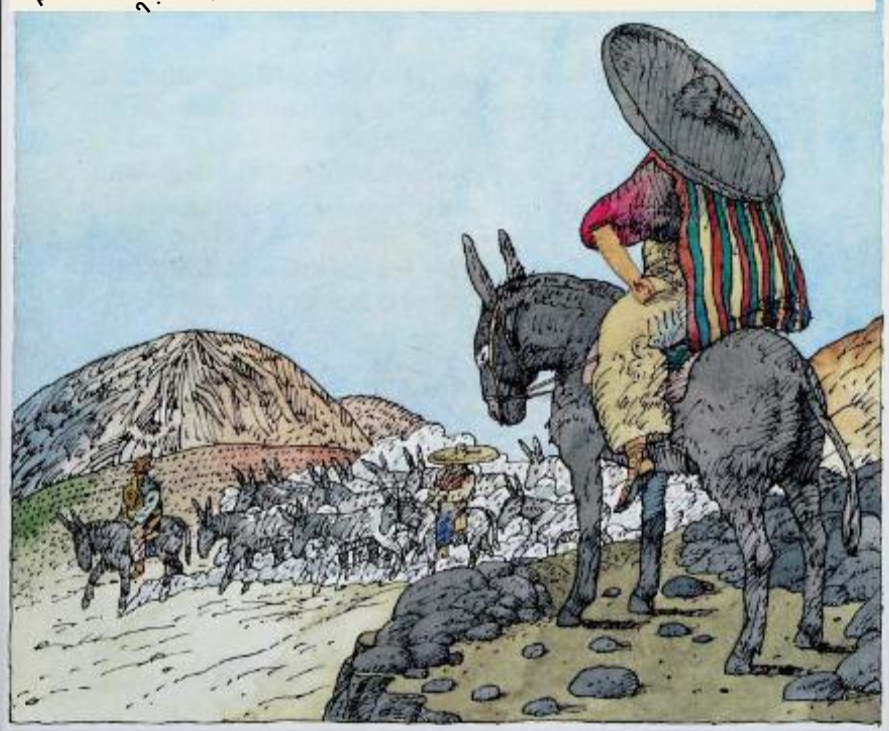

एक बड़ा मेंढक ज़मीन पर बैठा धूप सेंक रहा था. पेद्रो ने पादरी की हैट उस के ऊपर फेंक दी. फिर वह उसके निकट बैठ गया और अपने आखिरी संतरे को छीलने लगा.

जब व्यापारी पेद्रो के पास पहुँचे तो वह रुक गये. वह आपस में बातें कर रहे थे, पेद्रो संतरा खाता रहा और उसके कुछ टुकड़े वह हैट के नीचे सरकाता रहा.

एक आदमी ने पूछा, "तुम अपनी हैट को संतरे क्यों खिला रहे हो?"

"इसके नीचे मेरा जादुई पक्षी है," पेद्रो बोला.

"जादुई पक्षी! जादुई पक्षी!" दोनों आदमी एक साथ चिल्लाये.

"हाँ," पेद्रो ने कहा. "वह बातें करता है, वह गाता है, वह नाचता है."

"ज़रा हम भी देखें उस पक्षी को," एक आदमी ने कहा.

"नहीं," पेद्रो बोला. "वह उड़ जायेगा."

"क्या तुम उसे बेचोगे?" दूसरे आदमी ने पूछा.

"मेरा दिल टूट जायेगा," पेद्रो बोला. "लेकिन अभी मुझे पैसों की ज़रूरत है. मुझे एक सौ पिसौ दे दो और यह पक्षी तुम्हारा हो जायेगा."

एक आदमी ने पेद्रो को पैसे दिये और दूसरे ने हैट को उठाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया.

"रूको!" पेद्रो चिल्लाया. "जब तक मैं दूर नहीं चला जाता इसे हैट से बाहर न निकालना, अन्यथा यह मेरे पीछे-पीछे आ जायेगा."

जितनी तेज़ पैन्चिटा चल सकता था उतनी तेज़ पेद्रो वहाँ से चल दिया. उसने कहा, "पैन्चिटा, क्या तुम विश्वास करोगे कि जादुई पक्षी जैसी कोई चीज़ होती है?"

पैन्चिटा ने अपना एक कान आगे की ओर घुमाया. उसने कहा, *"इइइ-अअअआ!"*

इसके पहले कि पेद्रो आँख से ओझल हो पाता, जिस आदमी ने पक्षी खरीदा था, उसने हैट के नीचे अपना हाथ डाला. उसकी उँगलियों ने मस्सेदार मेंढक की चमड़ी को छुआ.

"उफ!" वह चीखा. "उस नीच को पकड़ो!"

उसका साथी चिल्लाया, "अर्रे! अर्रे!" और उसने अपने गधे को तेज़ी से दौड़ा दिया. पहले आदमी ने हैट को अपनी टोपी के ऊपर पहन लिया और अपने साथी के पीछे-पीछे चल पड़ा- बोझ से लदे गधे उसके पीछे चलने लगे.

उन आदमियों ने पेद्रो को पकड़ लिया, उससे अपने पैसे उन दोनों ने छीन लिए और अनाज के पुराने बोरे में उसे ठुस कर बंद कर दिया. फिर उस बोरे को पैन्चिटा पर लाद दिया और दोनों वहाँ से चल दिये.

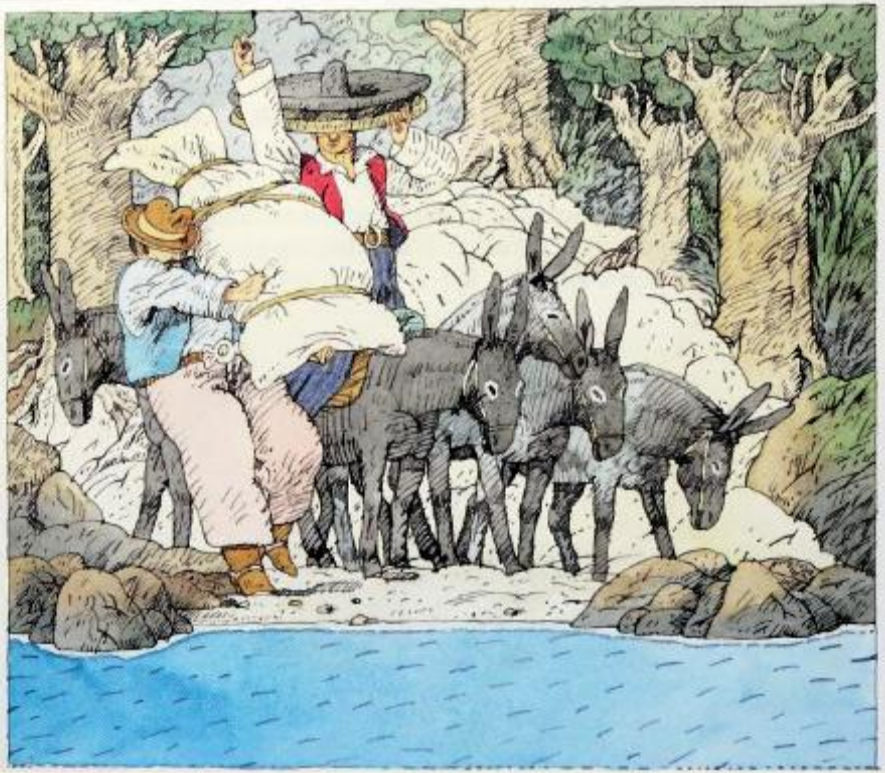

उस रात उन्होंने एक नदी के किनारे अपना कैंप लगाया. जिस आदमी ने मेंढक खरीदा था वह उस बोरे को, जिसमें पेद्रो बंद था, पानी के किनारे ले आया. वह बोरे को पानी में फेंकने ही वाला था कि उसके साथी ने कहा, "उसे अभी मत डुबाओ. सुबह डुबोना. उसे सारी रात इस के बारे में चिंता करने दो."

इस तरह पेद्रो कुछ देर के लिए बच गया. और वह चिंता करता रहा!

वह बार-बार अपने से कहता रहा, "हे ईश्वर, अगर आज आप इस मुसीबत से मुझे बचा लेंगे तो मैं फिर कभी झूठ नहीं बोलूँगा."

पेद्रो चुपचाप बोरे के अंदर लेटा रहा जब तक कि उसे उन व्यापारियों के खर्राटों की आवाज़ सुनाई न दी. फिर कीड़े समान वह रेंगता हुआ उस जगह आया जहाँ जानवर बंधे थे और बोला, "पैन्चिटा, सुनो."

पैन्चिटा ने अपना सिर पटका और सूँघने लगा, *हुह,हुह,हुह.*

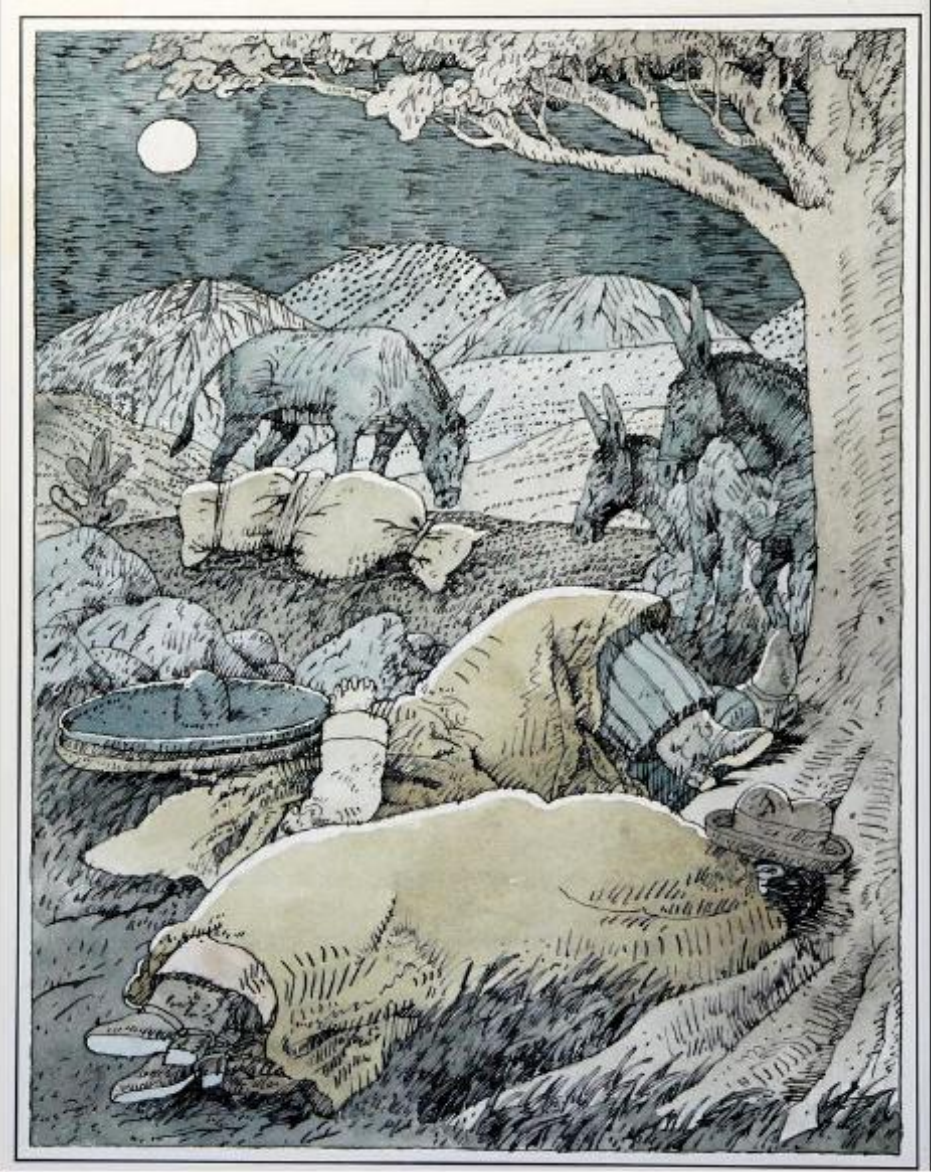

पेद्रो खिसक-खिसक कर उसके पास आ गया. फिर उसने बोरे का एक कोना गधे के मुँह के पास कर दिया. बोरा अनाज की गंध से महक रहा था.

पैन्चिटा को अनाज की गंध आई. उसने कहा, "*इइइ-अअआ!*"

पेद्रो घबरा गया, लेकिन व्यापारी खर्राटे लेते रहे.

पैन्चिटा बोरे को चबाने लगा और चबाता रहा, *ग्लान, ग्लान, ग्लान.*

शीघ्र ही बोरे में इतना बड़ा सुराख बन गया कि पेद्रो अपने हाथ बाहर निकाल सकता था. उसने हाथ बाहर निकाल कर रस्सी की गाँठ को खोल दिया. बोरा खुल गया. पेद्रो आज़ाद हो गया!

पेद्रो ने चुपके से पादरी की हैट वापस ले ली. फिर उसने पैन्चिटा को खोल दिया और दोनों घर की ओर चल दिये.

वह सारी रात चलते रहे. भोर के समय दूर उन्हें अपना गाँव दिखाई दिया.

पैन्चिटा भूल गया कि वह थका हुआ था और तेज़-तेज़ चलने लगा. जैसे ही वह पादरी के घर के निकट पहुँचे, पादरी घर से बाहर आए.

पैन्चिटा झटपट उनके पास आया और प्रसन्नता से *इइइ-अअअआ, इइइ-अअअआ* चिल्लाने लगा.

पादरी के आगे बढ़े हुए हाथ को वह चाटने लगा.

तब पादरी ने कहा, “तो, पैन्चिटा, तुम इस शरारती लड़के को घर वापस ले आए हो!”

पेद्रो ने उत्तर दिया, “हाँ, और पादरी जी, मैं उस पुस्तक की तलाश कर रहा हूँ जिस के मुख्य पृष्ठ पर लिखा हो, **सच कैसे बोलें**.”

पादरी ने देखा कि पेद्रो अपनी भूल पर पछता रहा था. “बहुत अच्छा,” उन्होंने कहा. “और अब लोगों को जगाने की घंटी बजाने का समय हो गया है.”

“मैं अभी घंटी बजाता हूँ,” पेद्रो ने कहा. वह पैन्चिटा की पीठ से नीचे उतर आया और झटपट चर्च के भीतर गया.

पेद्रो ने घंटी की रस्सी को कस कर पकड़ लिया और ज़ोर से हिलाने लगा. घंटी बजी *टन-टूँ.*

बस गाँव के लोग और घंटाघर के चमगादड़ समझ गये कि पेद्रो घर लौट आया था.

समाप्त